मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50
वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

उत्तर - साक्षरताकर्मियों के लिए

दिसंबर 2012 वर्ष 17, अंक 12

जन्मदिन स्मरण, 1 दिसंबर

काका कालेलकर : हिंदी के अनन्य उपासक

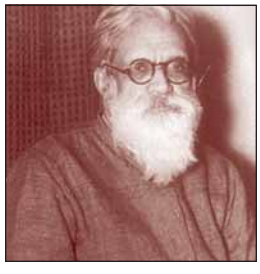

आचार्य काका साहब कालेलकर एक स्वतंत्रता सेनानी, साहित्यसेवी, शिक्षाशास्त्री, राष्ट्रभाषा-उन्नायक और यायावर थे। वे टैगोर के सान्निध्य में समाज और राष्ट्रसेवा की दीक्षा लेकर 1915 में गाँधी के संपर्क में आए। गाँधी से जुड़कर वे गाँधी के ही हो गए और उनके सत्संग में राष्ट्रभाषा हिंदी के सेवी और उन्नायक बन बैठे।

आचार्य कालेलकर का जन्म 1 दिसंबर, 1885 को महाराष्ट्र के सतारा में हुआ। पूरा नाम था दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर। पुणे के फर्ग्यूसन कॉलेज से दर्शन में एम.ए. (1904-07) करने के पश्चात तिलक के दैनिक 'राष्ट्रभक्त' से जुड़े। बाद में *सर्वोदय, सबकी बोली* और *मंगल प्रभात* (स्वतंत्रता-उपरांत) के भी संपादक बने। *नवजीवन* (गुजराती) और *यंग इंडिया* (अँग्रेजी) का भी संपादन किया।

सार्वजनिक जीवन में प्रवेश 1911 में बड़ौदा के गंगनाथ विद्यालय (राष्ट्रीय पाठशाला) में आचार्य बनने से हुआ। परिस्थितिवश विद्यालय बंद होने पर निराश हो हिमालय की आध्यात्मिक यात्रा पर चल पड़े, किंतु 'स्वराज्य संकल्प की पूर्ति के लिए' जल्द ही लौट आए। हिमालय यात्रा-क्रम में नाम रहा—लीलानंद। तब टैगोर के शांतिनिकेतन से जुड़कर शिक्षण कार्य किया। यहाँ गाँधी का *हिंद स्वराज्य* पढ़ने का अवसर मिला। इस पुस्तक से उनकी सोच की दिशा बदल गई। गाँधी के प्रति आकर्षण तो था ही, जब गाँधी ने टैगोर से कालेलकर को 'माँगा' तो सहज ही वे गाँधी से जुड़ गए। तो भी, गाँधी के गुजरात आश्रम से जुड़ने से पूर्व वे एक बार फिर,

मैं किसी भी समुदाय की प्रगति महिलाओं द्वारा हासिल की गई प्रगति से मापता हूँ।

डॉ. भीमराव आंबेडकर

निर्वाण दिवस, 6 दिसंबर, 1956

कुछ समय के लिए, बड़ौदा में केशवराव जी के पास रहकर जनसेवा में लगे रहे। गाँधी के आश्रम, साबरमती में उन्होंने संस्कृत पढ़ाने का काम किया। गुजरात विद्यापीठ काका साहब की बड़ी उपलब्धि थी। वे शिक्षक से उपकुलपति तक पहुँचे। परिस्थितिवश गुजरात विद्यापीठ और गुजरात दोनों उनसे छूट गया पर गाँधी नहीं छूटे। स्वाधीनता आंदोलन के क्रम में कई बार जेल गए।

गाँधी जी के कहने पर दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार हेतु वे गए (दिसंबर 1934)। वहाँ मनोयोग से काम में जुट गए। वे लोगों को समझाते—हिंदी को राष्ट्रभाषा स्वीकार करने में भारतीय संस्कृति समर्थ और पुष्ट होगी। सन् '34 से '40 तक राष्ट्रभाषा प्रचार का काम पूरी निष्ठा से की। दक्षिण में वे यह भी कहते—भारत की एकता बनाए रखने के लिए एक राष्ट्रभाषा जरूरी है, और यह हिंदी ही हो सकती है, क्योंकि यह भाषा देश की आम जनता आसानी से समझती है।

सन् 1935 में वे लिपि सुधार समिति के भी अध्यक्ष बनाए गए। इस दिशा में उन्होंने काफी काम किया। काका की मातृभाषा महाराष्ट्रीयन थी, द्वितीय भाषा गुजराती; राष्ट्रभाषा हिंदी के वे प्रचारक ही थे, संस्कृत के परम भक्त और अँग्रेजी के

अगले पृष्ठ में जारी...

नगर-नगर और डगर-डगर अब खुशियाली लाना है
जहाँ कहीं सुस्ती फैली हो जाकर दूर भगाना है
सूखे मरुथल में भी तुमको अब सरिता लहराना है
उठा कुदाली-गैंती को पर्वत में राह बनाना है।

जगन्नाथ 'विश्व', नागदा, म.प्र.

अच्छे ज्ञाता। कोंकणी, कन्नड़ और बांग्ला से भी अच्छा परिचय था। बहुभाषाविद् काका कालेलकर ने मराठी, गुजराती और हिंदी में सौ से अधिक कृतियाँ लिखीं। दो शब्दकोश भी तैयार किए। 1948 में नागरी आशुलिपि और टंकण यंत्र हेतु बनाई गई समिति के अध्यक्ष बनाए गए। स्वाधीनता के बाद भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के उपाध्यक्ष बने। 1952 से 1964 तक राज्यसभा के मनोनीत सदस्य रहे। कई देशों की यात्राएँ कीं। वे 'भारत के सांस्कृतिक राजदूत' कहे गए, पर मुख्य रूप से हिंदी के सेवक, उपासक और उन्नायक रहे। 'चलते-फिरते विश्वकोश' से अभिहित इस ज्ञानी का 21 अगस्त, 1981 को महाप्रयाण हो गया।

पुण्यतिथि 12 दिसंबर के अवसर पर

मैथिलीशरण गुप्त : राष्ट्रीय चेतना के संवाहक

जन्म : 3 अग., 1886
निधन : 12 दिसं., 1964

मूल रूप से मैथिलीशरण गुप्त ने अपने संपूर्ण लेखकीय जीवन में 74 कृतियों का प्रणयन किया। इसमें गद्य, पद्य, नाटक, मौलिक तथा अनूदित—सभी रचनाएँ शामिल हैं। रामभक्ति तथा काव्य रचना विरासत में ही प्राप्त हुई, तो भी, मुंशी अजमेरी के साहचर्य ने उनके काव्य-संस्कार को विकसित किया। आरंभिक शिक्षा झांसी में, पर मन नहीं रमा तो घर पर ही संस्कृत, हिंदी तथा बांग्ला साहित्य का अनुशीलन किया। गुप्त स्वभाव से लोकसंग्रही कवि थे। अपने समय की समस्याओं के प्रति सजग और संवेदनशील। गरम दल में विश्वास करते थे तो *जयद्रथ-वध* और *भारत-भारती* रचा। गाँधी के राजनीतिक पदार्पण के बाद उनके दर्शन से प्रभावित हो सुधारवादी आंदोलन के पक्ष में झुके। 1936 में गाँधी ने ही उन्हें मैथिली काव्यमान ग्रंथ भेंट करते हुए **राष्ट्रकवि** का संबोधन दिया। महावीर प्रसाद द्विवेदी के संसर्ग से उनकी काव्य कला निखरी। 1909 में पहले काव्य संग्रह *रंग में भंग* के प्रकाशन के बाद इनकी कृतियाँ लगातार आने लगीं। *भारत-भारती* तो उन दिनों राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम का घोषणापत्र ही बन गई थी। *साकेत* और *जय भारत* महाकाव्य हैं। *यशोधरा, विष्णुप्रिया, पंचवटी, नहुष, झंकार, गुरुकुल* और *काबा-कर्बला* उनकी अन्य रचनाएँ हैं। खड़ी बोली के स्वरूप निर्धारण और विकास में गुप्त जी का अन्यतम योगदान रहा। सन् 1952 में वे राज्यसभा-सदस्य मनोनीत हुए और 1954 में पद्मभूषण सम्मान मिला। कई महत्वपूर्ण सम्मान-पुरस्कार भी उन्हें मिले। गुप्त जी की प्रसिद्ध कविता का एक अंश प्रस्तुत है :

हम कौन थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।

जयंती 25 दिसंबर पर स्मरण करते हुए

महामना मदन मोहन मालवीय

उनका मन अत्यंत विशाल था इसी से उनके नाम के पीछे 'महामना' विशेषण जुड़ा। ऐसे महामना मदन मोहन मालवीय का जन्म 25 दिसंबर, 1861 को हुआ था। बापू ने अपनी आत्मकथा में उन्हें 'भारतभूषण' लिखा और उनके कमरे को 'गरीबों की धर्मशाला'। उनके व्यक्तित्व में मालवा की मिट्टी की रसमयता थी। गाँधी ने उनके स्वभाव को 'जल की स्फटिक निर्मल धारा' कहा। दरअसल, गाँधी जब दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे थे तो उन्होंने मालवीय जी को ही अपने सबसे करीब पाया। मालवीय जी स्वतंत्रता सेनानी थे, पत्रकार थे, समाज सुधारक थे और पूरे-पूरे भारतीय थे। वे स्वतंत्रता आंदोलन के क्रम में कई बार जेल गए।

एक प्रखर बुद्धिजीवी के रूप में उन्होंने *हिंदुस्तान, अभ्युदय, मर्यादा, किसान* और *लीडर* आदि अनेक समाचार पत्रों का संपादन किया। उनके विचार और लेखन में देश की संस्कृति के प्रति गौरव का प्रबल भाव होता था। उनकी भाषा व शैली ओजपूर्ण थी। देशवासियों में राष्ट्रीयता की भावना भरने के विचार से उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की। उनकी नजर में 'हिंदू' शब्द धर्म या संप्रदाय को नहीं बल्कि सनातनता को व्यक्त करने वाला शब्द था। सर्वधर्म समभाव उनमें कूट-कूटकर भरा था। गीता के चिंतन से अनुप्राणित मालवीय ने हरिजनों के अधिकारों की लड़ाई लड़ी थी। मालवीय जी की खास बात यह थी कि जन-शक्ति को राष्ट्र-शक्ति कैसे बनाया जाए यह वह बखूबी जानते थे।

"भारत की नियति अब उसकी कक्षाओं में आकार ले रही है।"

पं. मदन मोहन मालवीय का कथन

डॉ. आईदान सिंह भाटी को पुरस्कार

हिंदी-राजस्थानी के लेखक **डॉ. आईदान सिंह भाटी** को उनके कविता-संग्रह 'आँख हियं रा हरियल सपना' के लिए वर्ष 2012-13 हेतु राजस्थानी भाषा, साहित्य-संस्कृति अकादमी के सूर्यमल्ल मीसण शिखर पुरस्कार से सम्मानित करने की घोषणा की गई है। पुरस्कारस्वरूप उन्हें 71 हजार रुपये की राशि, प्रतीक चिह्न एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए जाएँगे। श्री भाटी की नेशनल बुक ट्रस्ट के नवसाक्षर साहित्यमाला के अंतर्गत *बैरंग लिफाफा* नामक पुस्तक प्रकाशित है।

जन्मदिवस 18 दिसंबर पर विशेष

लोककवि भिखारी ठाकुर

लोककवि भिखारी ठाकुर भोजपुरी के लोक नाटककार, अभिनेता, नाट्य निर्देशक, सूत्रधार और नर्तक–सब एक साथ थे। उनके गीत और नाटक आज भी विश्व भर में फैले भोजपुरी समाज को अनुप्राणित करते हैं। वे कबीर की तरह जन-जन के कंठहार बन गए। उनके गीत लोक के कंठों के प्राण बन गए हैं।

इस 'लीजेंड' का जन्म बिहार के कुतुबपुर गाँव में 18 दिसंबर, 1887 को हुआ था। बचपन में भिखरिया के नाम से प्रसिद्ध यह निपट-गँवार आगे 'लीजेंड' बन जाएगा कोई नहीं जानता था। नाममात्र की शिक्षा पाए नाईगिरि के पेशे से जुड़े परिवार के भिखारी का जन्म पराधीनता के उस दौर में हुआ था जब देश में सामाजिक एवं धार्मिक बुराइयाँ भरी पड़ी थीं। भिखारी से यह देखा न गया कि माँ-बाप अपनी कमसिन बेटियों को बूढ़े और अपाहिज से ब्याह दे रहे हैं। सामंती मानसिकता, पारिवारिक कलह आदि समाज को पतन की दिशा में ले जा रहे थे। तभी उन्होंने गीत रचने शुरू किए और गली-गली गीत गा-गाकर लोगों की चेतना को जगाने लगे। उनके गीत, दोहों और कविताओं में भक्ति के साथ समाज सुधार की चेतना भी थी। सामाजिक द्वेष और विषमता उनके चिंतन के मूल में थे। वे रैदास और कबीरदास की परंपरा की एक कड़ी थे। भिखारी ठाकुर ने पाँच दशकों के अपने लंबे नाट्य और कविता-गीत लेखन की बदौलत भोजपुरी समाज में अपनी अमिट पहचान बना ली। उन्हें 'भोजपुरी का शेक्सपियर' यूँ ही नहीं कहा जाता। वे सही मायनों में लोक नाटककार थे।

यूनीसेफ–सृजन दिवस, 11 दिसंबर

यूनीसेफ (UNICEF–युनाइटेड नेशंस चिल्ड्रेंस फंड) संयुक्त राष्ट्र का बाल केंद्रित एक कार्यक्रम है। इसका मुख्यालय न्यूयॉर्क में है। यह विकासशील देशों में बच्चों और माँओं के लिए लंबी अवधि की मानवीय और विकासात्मक सहायता उपलब्ध कराता है। इस कार्यक्रम का सृजन संयुक्त राष्ट्र की आम सभा ने 11 दिसंबर, 1946 को किया था। इसका तत्कालीन उद्देश्य था द्वितीय विश्व युद्ध में जिन देशों में विध्वंस लीला खेली गई वहाँ के बच्चों के लिए आपातकालीन भोजन एवं स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराना। 1954 में यूनीसेफ संयुक्त राष्ट्र की व्यवस्था का एक स्थायी अंग बन गया। UNICEF अपने सृजन के समय युनाइटेड नेशंस इंटरनेशनल चिल्ड्रेंस इमर्जेंसी फंड था, पर वही संक्षिप्त रूप आज भी जारी है।

संदर्भ : विश्व विकलांग दिवस, 4 दिसंबर

शिक्षा की अलख जगाते ये नेत्रअक्षम शिक्षक

मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश के दो शिक्षक अपने क्षेत्र के 'हीरो' बने हुए हैं। दरअसल, इन दोनों ने बचपन में ही अपनी आँखों की रोशनी खो दी थी, लेकिन आज ये दोनों दूसरों के जीवन में ज्ञान का उजाला भर रहे हैं। ओम प्रकाश शर्मा और रामपाल नामक ये शिक्षक आपस में गहरे मित्र भी हैं और एक ही कॉलेज में पिछले 28 साल से अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

बचपन में आँखों की रोशनी खोने के बाद दोनों ने शिक्षा की रोशनी से जग में उजाला भरने का निश्चय किया। पढ़ाई पूरी करने के बाद दोनों एक साथ शिक्षक पद के लिए चयनित हुए। जिस कॉलेज में ये अध्यापन कार्य करते हैं वहाँ पढ़ने वाले ज्यादातर छात्र ग्रामीण परिवेश, मजदूर वर्ग और अल्प आय वर्ग के हैं। ओम प्रकाश और रामपाल का कहना है कि वे अपने छात्रों को देख नहीं पाते। फिर भी अपने शिष्यों के साथ उनके अंतर्मन का ऐसा संबंध है कि वे अपनी कक्षा में पढ़ चुके सभी शिष्यों के बैठने के स्थान, उनकी रुचि और शरारतों के बारे में सब कुछ जानते हैं। ओम प्रकाश जी का कहना है कि पढ़ाने में नेत्रहीनता कभी बाधा नहीं बनी। देखता तो हर कोई है, लेकिन ज्ञानेंद्रियों से देखने के अलावा अंतर्मन की आँखों से देखना भी एक कला है। रामपाल जी का कहना है कि हमें उस समय बेहद खुशी होती है जब हमारा पढ़ाया हुआ बच्चा समाज में उपलब्धि पाता है।

आइए, इस विश्व विकलांग दिवस के अवसर पर हम यह प्रण करें कि हर तरह के शारीरिक विकलांगता वाले व्यक्ति को अपने स्तर से जो भी बन पड़े, सहायता करेंगे।

अपने पाँव से चित्र बनाती हुई एक लड़की

हमें पाटना है विषमता की खाई
इसी में सदा हम सभी की भलाई
कहाँ भेद! जब ईश है एक सबका
सभी बहिना-बहनें सभी भाई-भाई
सुखी सब रहें ऐसी दुनिया बसाएँ
चलो सब चलें देश आगे बढ़ाएँ।

डॉ. बी.पी. दुबे, सागर, म.प्र.

पाँच कविताएँ, पाँच रंग

जाड़ा

अज़ीज़ जौहरी

लगा सताने जाड़ा भाई
दाँत बजाती बुढ़िया माई
महतो दादा हाथ सेंकते
मचिया बैठे ओढ़ रजाई
सर्दी ने अभिशाप दिया है
सूखा चेहरा फटी बिवाई
कैसी लगती है सुबह-सुबह
फसल खेत की ओस नहाई
चना-मटर-जौ-गेहूँ फूले
फूली सरसों फूली राई।

इलाहाबाद, उ.प्र.

हमारे गाँव

अहद 'प्रकाश'

कितने अच्छे अपने गाँव
यहाँ प्रेम की मीठी छाँव
गाँव में खेतों की हरियाली
गाँव में हँसता-गाता माली
गाँव की फसलें गाँव का पानी
गाँव की बच्चो, शान निराली
देश की रौनक, देश के गाँव
यहाँ प्रेम की ठंडी छाँव
गाँव देश के हैं आधार
गाँव से चलता है व्यापार
गेहूँ चावल हरी सब्जियाँ
सारी चीजें मिलें अपार
देश की शक्ति, देश के गाँव
यहाँ प्रेम की ठंडी छाँव।

भोपाल, म.प्र.

शिक्षा से होता कमाल

संदीप 'सृजन'

नवीन सोच, नया खयाल
अज्ञान दे बाहर निकाल।
शिक्षा का सूरज निकले
रोशन हो विश्व विशाल।
पुस्तक पहुँचे हर घर
आँगन हो जाए निहाल
मिटे भेद ऊँच-नीच का
शिक्षा से होता कमाल।

उज्जैन, म.प्र.

बेटी

डॉ. बी. पी. दुबे

मालिक ने दिया जो हमें उपहार है बेटी
बेटी है तो घर-बार है संसार है बेटी
बेटी को बचाएँ सभी बेटी को पढ़ाएँ
किलकारियाँ शहनाइयाँ सिंगार है बेटी।

सागर, म.प्र.

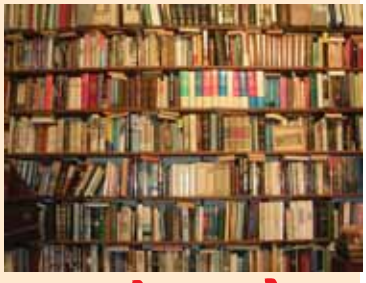

पढ़ने जाना है

डॉ. श्रीप्रसाद

पढ़ने से ही ज्ञान मिलेगा
पढ़ने से ही मान मिलेगा
हमको पढ़ने जाना है
हमको देश बनाना है।

सूरज खिल-खिल आ जाता
फिर हँसकर चंदा आता
पढ़कर ही हम जानेंगे
तारों को पहचानेंगे
पढ़कर ही यह पता लगा
हम गुलाम हैं, देश जगा
अब स्वतंत्र होना हमको
जरा नहीं सोना हमको
नेता आए पढ़कर के
ज्ञानी बनकर बढ़कर के।

तब स्वतंत्र हो पाए हम
तब आजाद कहाए हम
पढ़ना है सुंदर सपना
पढ़ना है जीवन अपना
पढ़ा-लिखा हो देश सभी
मन भाएगा देश तभी
बगिया है ये हरी-भरी
अनपढ़ता ने बुरी करी
पढ़कर के बदलेंगे हम
रूप नया-सा देंगे हम।

पढ़ना पढ़ना पढ़ना है
इस दुनिया में बढ़ना है।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के अंतर्गत नवसाक्षर साहित्यमाला की नवीनतम पुस्तकें

राजा के दो सींग पृष्ठ 12 ₹ 11.00

ऋषिमोहन श्रीवास्तव, चित्र : यू.के.बाला

प्रस्तुत कहानी लोक कथा पर आधारित है। कहानी रामगढ़ रियासत के वीरसिंह नामक एक राजा और उसके नौकर पर केंद्रित है। एक दिन राजा के सिर में अचानक असहनीय दर्द उठा। उसने सिर की मालिश के लिए अपने नौकर बनवारी को बुलाया। नौकर ने जैसे ही राजा के सिर से मुकुट उतारा तो वह सिर में राजा के दो सींग देखकर मंद-मंद मुस्कुराने लगा। राजा ने उसे हिदायत दी कि वह इस राज को भविष्य में किसी के सामने न बताए। क्या बनवारी राजा के इस राज को छुपा पाएगा? आएँ, कहानी पढ़कर पता लगाएँ।

हम सब एक हैं पृष्ठ 12 ₹ 11.00

फारूख आफरीदी, चित्र : यू.के.बाला

प्रस्तुत कहानी आपसी भाईचारे पर केंद्रित है। कहानी में फरीदा नामक एक लड़की है। एक बार नेहरू कॉलेज की बस में गुरुद्वारे के सामने जोर का बम धमाका हुआ। जिस वक्त यह धमाका हुआ उस वक्त फरीदा के दादा हामिद रोज की भांति अपने मित्र सतनाम के साथ वहीं गुरुद्वारे में बैठकर बतिया रहे थे।

धमाके की आवाज से वे दोनों तुरंत घटना स्थल पर पहुँचे और कॉलेज जा रही घायल लड़कियों को पास में खड़े लोगों की मदद से अस्पताल पहुँचाया। घर आकर हामिद ने शहर में दंगे की खबर से चिंतित फरीदा की माँ को घटना की जानकारी देते हुए पास में बैठी फरीदा को उसकी सहेली वंदना को अस्पताल चलकर खून देने के लिए कहा। हामिद की बात सुनकर फरीदा तुरंत अपने दादा के साथ चल पड़ी। पास खड़ी नूरजहाँ ने शंका करते हुए हामिद और फरीदा को रोकते हुए कहा कि कहीं वे लोग दूसरे धर्म के कारण खून लेने से इंकार न कर दे। हामिद ने विस्तार से समझाकर कहा कि सबसे बड़ा धर्म इंसानियत का धर्म है। खुदा की नजर में हम सब एक हैं।

रेवा की वापसी पृष्ठ 16 ₹ 11.00

सीमा व्यास, चित्र : फजरूद्दीन

प्रस्तुत कहानी में रेवा नामक एक नवयुवती है। शादी वाले दिन सब ओर चहल-पहल और काफी रौनक थी। रेवा भी अपने होने वाले जीवनसाथी के सपनों में खोई हुई थी। दहेज के लोभी ससुरालवालों की मांग पूरी न होने पर बारात वापिस चली गई। रेवा इस अपमान को सहन न कर सकी। रात भर यही सोचती रही कि वह सुबह कैसे गाँववालों और अपनी सहेलियों का सामना करेगी। इस अपमान से बचने के लिए उसने मन ही मन गाँव से गुजरकर जाने वाली नर्मदा नदी में डूबकर अपनी जीवन लीला खत्म करने का संकल्प किया। सुबह घर के बाकी लोगों के उठने के पहले ही वह तेज कदमों से बढ़ते हुए नर्मदा नदी की ओर चली जा रही थी। अचानक उसे पेड़ों के बीच में से एक शांत ओर मधुर आवाज सुनाई दी। साधना में लीन साधू की आवाज ने रेवा के बढ़ते कदमों को रोक दिया। साधू ने रेवा को जीवन का महत्व समझाते हुए उसे समाज कल्याण के कार्य को करने के लिए प्रेरित कर जीवन की सार्थकता का मंत्र दिया।

बकरी का बच्चा पृष्ठ 12 ₹ 11.00

संदीप श्रीवास्तव, चित्रः फजरूद्दीन

इस कहानी के केंद्र में बकरी एवं उसका बच्चा तथा मांशु नामक नन्ही-सी लड़की है। एक दिन मांशु अपने पिता के साथ नदी की ओर सैर कर रही थी। अचानक मांशु को नदी के तट पर उछल-कूद करती बकरी और उसका प्यारा-सा बच्चा दिखाई दिया। वह मचलकर जैसे ही उन्हें पकड़ने दौड़ी तो बकरी और उसका बच्चा उससे बचने के लिए नदी में कूद गए। नदी के तेज बहाव से मांशु के पिता ने किसी तरह बकरी को तो बचा लिया पर नन्हा बच्चा पानी के तेज बहाव में बह गया। बकरी और मांशु दोनों बहुत उदास रहने लगे। एक दिन खोजते-खोजते दूर नदी के तट पर घायल अवस्था में बकरी का बच्चा मिला। बच्चे को देखकर बकरी और मांशु दोनों बहुत खुश हुए।

पर्यावरण की पुजारिन पृष्ठ 24 ₹ 13

रामशंकर चंचल; चित्र : दीपक कुमार दास

वनांचल झाबुआ नगर से सटे गाँव बामन सेमलिया में मकना का घर है। उनकी तीन संतानों में एक पुत्री नरमा अपने बाकी भाई-बहन से बिलकुल अलग है। नरमा ने अपनी खास रुचि और पसंद के अनुसार अपने छोटे-से घर-आँगन को फूल, पेड़, पौधे और तोते, बिल्ली, कुत्ते आदि घरेलू पशु-पक्षियों से भर रखा है, लेकिन बेहद सुरुचिपूर्ण ढंग से। गाँव में जब वृक्षारोपण को लेकर एक कार्यक्रम हुआ तो उसने बढ़-चढ़कर भाग लिया। उसने कम उम्र में विवाह से इनकार कर दिया और कॉलेज की पढ़ाई करने लगी। उसके प्रयास से कॉलेज का एनएसएस कैंप उसके गाँव में भी लगा जिसमें पर्यावरण चेतना पर विचार-विमर्श हुआ और वृक्षारोपण के कार्यक्रम चले। नरमा के इस पर्यावरण प्रेम पर राज्य के मुख्यमंत्री ने भी उसे बधाई दी और गाँव को पुरस्कृत किया। पर्यावरण जागरूकता पर पुस्तक।

पुस्तक की दुकान पृष्ठ 16 ₹ 11

पुष्पा सिंह 'विसेन'; चित्र : दीपक कुमार दास

झारखंड के गाँव में रहने वाला बालक विदेशिया गाँव में जमींदारों के रोब दाब और गलत व्यवहार को भुगत चुका था। गाँव में छोटी जाति के बच्चों को पढ़ाया नहीं जाता था, तिस पर कम उम्र में ही ब्याह का दबाव भी उस पर था। परेशान होकर वह भागलपुर भाग आया और एक पुस्तक की दुकान में नौकरी करने लगा। दुकानदार अच्छे मिजाज का था। उसने उसे पढ़ाया-लिखाया भी और उसके योग्य होने पर अपनी इकलौती बेटी से उसका ब्याह भी कर दिया। अब विदेशिया के बूढ़े माता-पिता भी अपने बेटे-बहू के घर आ गए। बहू स्कूल शिक्षिका बन गई और बेटा भी पढ़-लिखकर उच्च शिक्षित बन गया था। शिक्षा से सब कुछ संभव है यह संदेश देती है यह पुस्तक।

विचारों को शब्द-
सरिता में बहने दो
अविरल अविचल
धारा में इन्हें खोने दो
फिर रचेंगे ये
नए सृजन का इतिहास
बस विचारों का
शब्द-प्रवाह होने दो।
विशाल शुक्ल 'ॐ', छिंदवाड़ा, म.प्र.

जो अपढ़ हैं उन्हें भी पढ़ाएँगे हम
जो हैं नादान उनको सिखाएँगे हम
हर लगन के कदम आजमाने चलें।
डॉ. बी.पी. दुबे, सागर, म.प्र.

आओ प्रौढ़ों को
साक्षर बनाएँ
उनको पढ़ना-
लिखना सिखाएँ
आशा-दीप उनके
मन में जगाएँ
प्रो. शामलाल कौशल, रोहतक, हरियाणा

लिखना-पढ़ना आभूषण सम
है शिक्षा तो वरदान
कर सकते हैं पढ़े-लिखे जन
नव समाज निर्माण।
सुकीर्ति भटनागर, पटियाला, पंजाब

'क' से कमाओ
'ख' से खाओ
'ग' से गाओ गीत
साक्षर बनो और बनाओ
जीवन को संगीत।
लक्ष्मी विमल, पलामू, झारखंड

हम बड़ी बात न सोचें, अच्छी सोचें। —महात्मा गाँधी

पाठकीय प्रतिक्रिया

- नवंबर 2012, सा. सं. : उपयोगी सामग्री से भरपूर बहुरंगी और ज्ञानपरक सा. सं. का नवंबर अंक पाकर प्रसन्नता हुई। मुखपृष्ठ पर प्रथम प्रधानमंत्री पं. नेहरू के चित्र के साथ हिंदुस्तान का भविष्य देखने की उनकी खास दृष्टि प्रेरक लगी। साथ ही, अबुल कलाम आजाद के बारे में उनकी सम्मति भी बड़ी प्रभावशाली थी। शिक्षा दिवस के अवसर पर शिक्षा पर अनेक विद्वानों के विचार और कवि हरिवंश राय बच्चन के जन्मदिन पर उनकी प्रसिद्ध कविता के माध्यम से उनको याद करना भी अच्छा लगा। 'जो बीत गई सो बात गई' कविता वाकई प्रेरक और प्रभावशाली है। पं. बी.एन. मुदगिल, रोहतक, हरियाणा
- अंक में प्रकाशित सभी कविताएँ अच्छी लगीं। अंक पठनीय और प्रशंसनीय है। माता प्रसाद शुक्ल, ग्वालियर, म.प्र.
- अक्तूबर '12 : अंक अनवरत मिल रहा है। ढेर सारी उपयोगी साहित्यिक सामग्री देकर आप जिस तरह से साहित्य की सेवा कर रहे हैं उसकी किसी से तुलना करना व्यर्थ है। अद्यतन जानकारी का खजाना है सा. सं.।
  विनय 'अश्म', संपा.—लेकिन, जमुई, झारखंड
- कौशलपूर्ण संपादकीय निर्देशन में सा. सं. ने बहुत ऊँचाइयाँ पाई है। इस पत्रिका ने हमारे जैसे साक्षरताप्रेमी नवसाक्षरों को बहुत कुछ अच्छा करने की प्रेरणा दी और राह बताई है। गाँधी व शास्त्री जी पर कविताएँ अच्छी थीं। प्रो. उषा यादव की कविता 'अब व्यंजन की बारी है' काफी शिक्षाप्रद लगी।
  अशोक कुमार पुरोहित, इंदौर, म.प्र.
- रूप नारायण काबरा की कविता 'गाँधी जी के तीन बंदर' अच्छी लगी। गाँधी जी की तरह हम भी यदि तीन बंदरों को अपना शिक्षक मानकर 'बुरा ना देखें, बुरा न सुनें और बुरा न बोलें' पर अमल कर सकें तो हमारा जीवन भी सार्थक व सफल हो सकता है। दुर्गा प्रसाद शर्मा, बुलंदशहर, उ.प्र.
- सा. सं. के अंक मिल रहे हैं। पत्रिका लघु होते हुए भी गागर में सागर समेटे हुए है। रचना-चयन से लेकर प्रस्तुतीकरण तक सब सर्वोत्तम है। संदीप कपूर, अम्बाला, हरियाणा
- सा. सं. में उत्तरोत्तर निखार आता जा रहा है। इसके लिए संपादकीय टीम को बधाई। अक्तूबर अंक में लाल बहादुर शास्त्री और बापू को आपने जिस काव्यमय ढंग से स्मरण किया है वह निश्चय ही अनूठा है। इस पत्रिका की एक और खास बात जो इसे संग्रहणीय बनाती है वह है इसके अंदर विभिन्न महत्वपूर्ण दिवसों से संबंधित जानकारी। रचना सिद्धा, जयपुर, राजस्थान

किताबों से दोस्ती
पन्नों से प्यार
सफल जीवन का
यही है सार।

पढ़ना और आगे बढ़ना
खुश ही खुश रहना
उन्नति की सीढ़ियाँ
चढ़ते ही जाना।
नरेंद्र नाथ लाहा, ग्वालियर, म.प्र.

रचनाकार कृपया ध्यान दें : कृपया पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएं ही भेजें—प्रेरक, उद्‌बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएं संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएं कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें। *—संपा.*

सम्मान

नवल जायसवाल

अक्षर लाऊँ अक्षर गाऊँ
रोज सवेरे अमृत पाऊँ।

बावन अक्षर की माला के
मीठे वाक्य बनाता जाऊँ।

मात्रा का मैं ध्यान रखूँ
ह्रस्व-दीर्घ को बुनता जाऊँ।

कथा-कविता कहना चाहूँ
पूर्ण विराम तक कहता जाऊँ।

बात अधूरी होती है तो
अल्प विराम को रखता जाऊँ।

स्वर-व्यंजन में नाता है
दोनों को प्यार चटाता जाऊँ।

गणना की जब भी बात कहूँ
दशमलव को गुनता जाऊँ।

एक से लेकर नौ तक गाऊँ
शून्य का मर्म समझता जाऊँ।

गुरुजनों ने ईश बताया
प्रशस्त मार्ग पर चलता जाऊँ।

अनुस्वार का तिलक लगा
गीत शारदे के गाता जाऊँ।

संकेतों का ध्यान रखूँ
उच्चारण में 'नवल' कहता जाऊँ।

भोपाल, म.प्र.

पढ़ें-पढ़ाएँ

रमाकान्त श्रीवास्तव

निरक्षरों को गले लगाएँ
घोर उपेक्षित रहते हैं जो
उन्हें पढ़ाएँ
भले बनाएँ।
विद्यादान श्रेष्ठ दान है
इससे बढ़कर कौन दान है
दानवीर कहलाएँ
पढ़ें-पढ़ाएँ।
रहे न कोई जगह निरक्षर
उस तक पहुँचें राह बनाएँ
चलें-चलाएँ
पढ़ें-पढ़ाएँ।
तपिश निरक्षरता में होती
खिले फूल वह मुरझाती
उन्हें खिलाएँ
पढ़ें-पढ़ाएँ।
महकाएँ
पढ़ें-पढ़ाएँ।

लखनऊ, उ.प्र.

कुछ दोहे

डॉ. देवेन्द्र आर्य

अनपढ़ता अभिशाप है, रहो न इसके साथ
अक्षर-अक्षर पढ़ चलो, डाल हाथ में हाथ।

पढ़ो-पढ़ाओ, मिल चलो, नए ज्ञान की ओर
अँधियारे को दूर कर, निकलेगी नव भोर।

अच्छी पुस्तक, ज्यों मिले, कोई अच्छा मीत
दुख में जैसे बज उठे, प्यार भरा संगीत।

पढ़ो-लिखो आगे बढ़ो, छू लो नभ के छोर
तुम्हें देखकर ज्ञान की, उतरेगी नव भोर।

पुस्तक को साथी बना, बना ज्ञान को मीत
फिर तेरी हर युद्ध में, जीत जीत है जीत।

गाजियाबाद, उ.प्र.

नया ककहरा

भगवती प्रसाद द्विवेदी

'क' से करें काम हम जमकर
'ख' से खेलें रोज समय पर

'ग' से नहीं करेंगे गलती
'घ' से घड़ी हमारी चलती

'च' से चलता चक्र समय का
'छ' से छोड़ें चक्कर भय का

'ज' से जल जैसा जीवन हो
'झ' से झगड़ा, न अनबन हो

पटना, बिहार

महिलाएँ पढ़ रही हैं

देश में पढ़ी-लिखी महिलाओं की संख्या तेजी से बढ़ रही है। पढ़ाई की बदौलत वे अब आर्थिक मोर्चे पर पुरुषों के समान अवसर पा रही हैं और इसमें सक्रिय भागीदारी भी निभा रही हैं। आँकड़े कहते हैं कि वर्ष 2001 की जनगणना में शिक्षित महिलाओं की संख्या जहाँ 53.67 फीसद थी वहीं महज दस वर्षों के अंदर यह संख्या बढ़कर 65.4 फीसद हो गई है। बालिका शिक्षा के मामले में पाँच से 14 साल के आयु समूह में स्कूलों में लड़कियों की संख्या 2004-05 में 79.6 फीसद थी वह 2009-10 में बढ़कर 87.7 फीसद हो गई। इसी तरह, 15 से 19 वर्ष के आयु समूह में पढ़ने वाली लड़कियों की संख्या 40.3 फीसद से बढ़कर 54.6 फीसद हो गई। माना जा रहा है कि राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के द्वारा महिला सशक्तीकरण की दिशा में किए गए प्रयासों का यह सुफल है। विदित हो कि सरकार ने महिलाओं और लड़कियों के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएँ चला रखी हैं।

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/12/2012

पढ़ने के फायदे

- यह आपको आगे बढ़ाता है।
- साक्षरता निर्माण में सहायता करता है।
- आपके व्यक्तित्व का निर्माण करता है।
- आपको अधिक बुद्धिमान और तेजोमय बनाता है।
- आपकी समझ को बढ़ाता और उसे स्पष्ट करता है।
- यह आपको सारी दुनिया की सैर कराता है।
- पढ़ने वालों को किसी अन्य साथी की जरूरत नहीं होती।

किताबें मन के बंद दरवाजे खोलती हैं
ताजा हवा घोलती हैं
जीवन में रंग भरती हैं
मौन रहकर भी बहुत कुछ कहती हैं

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : बलदेव सिंह 'बद्दन'
कार्यकारी संपादक : दीपक कुमार गुप्ता
उत्पादन सहयोग : नरेन्द्र कुमार

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे साक्षरता संवाद के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 की ओर से सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (उत्पादन) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित; तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-I, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070